'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल'

(प्रत्येक 1 अंक)

(1) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाहती है?

उ०- इस कविता में कवयित्री अपने प्रियतम अर्थात ईश्वर का पथ आलोकित करना चाहती हैं, ताकि प्रभु मिलन का मार्ग प्रकाशित हो सके। उसके एवं प्रभु के मिलन में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो।

---

(2) महादेवी वर्मा अपने मन रूपी दीपक को जलाकर क्या करना चाहती हैं?

उ०- महादेवी वर्मा अपने मन रूपी दीपक को जलाकर अपने प्रियतम को प्राप्त करना चाहती हैं। अपने मन रूपी दीपक को जलाकर वह अपने समर्पण एवं बलिदान को व्यक्त कर रही हैं। वे स्वयं को मिटाकर भी अपने प्रियतम का सान्निध्य पाने की आकांक्षा रखती हैं।

---

(3) मधुर ---- जल कविता के माध्यम से कवयित्री ने किस बात की प्रेरणा देने का प्रयास किया है?

उ०- इस कविता के माध्यम से कवयित्री ने हमें सदैव ईश्वर के प्रति आस्था बनाए रखनी चाहिए एवं ईश्वर के प्रति आस्था रूपी दीपक से सबके हृदय में ईश्वरीय प्रेम की भावना जाग्रत करने की प्रेरणा दी है।

(4) कवयित्री कविता के माध्यम से किस भावना को वर्णित कर रही हैं।

उ०- कविता के माध्यम से कवयित्री अपने मन में प्रभु के प्रति निरंतर आस्था जलाए रखने की भावना को वर्णित कर रही हैं।

प्रत्येक-2 अंक-

प्र०5 - दीपक शब्द किसका प्रतीक है? कवयित्री दीपक को किस रूप में समर्पित करना चाहती है?

उ०- 'दीपक' शब्द कवयित्री के मन में आलोकित होने वाली 'आध्यात्मिक आस्था' का प्रतीक है।

कपपिली चाहती है कि उसके मन में आस्था रूपी दीपक सदैव जलता रहे। उसके प्रियतम का पथ आलोकित करता रहे अर्थात उसका संघर्ष जीवन प्रभु के चरणों में समर्पित रहे।

प्र० 6 - 'मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन' का आशय स्पष्ट करें।

उ० - कपपिली चाहती है कि उसका मन कोमल नरम मोम के समान स्वयं को गलाकर प्रभु के चरणों में समर्पित कर दे। कपपिली पूरी तरह से अपने अहंकार को भुलाकर भावनामय भक्ति में डूब जाना चाहती है। वह अपने चारो ओर प्रभु-भक्ति का आध्यात्मिक प्रकाश फैलाना चाहती है।

प्र० 7 - 'ज्वाला-कण' शब्द से क्या तात्पर्य है? इसकी माँग किसने किससे की है? और क्यों?

उ० - ज्वाला - कण का अर्थ है - अग्नि का एक छोटा-सा कण यहाँ कविता के संदर्भ में इसका अर्थ है - आध्यात्मिक आस्था की थोड़ी-सी अनुभूति। संसार के सभी शीतल, कोमल व नूतन प्राणी महादेवी के आस्था रूपी दीपक से चिंगारी की माँग करते हैं अर्थात शक्ति माँगते हैं क्योंकि वे सभी ईश्वरीय भक्ति में लीन होना चाहते हैं।

प्र० 8 - 'विश्व-शलभ' से क्या अभिप्राय है? उसे क्या पछतावा है?

उ० → विश्व-शलभ का शाब्दिक अर्थ है - सारा संसार पतंग की भाँति आस्था की लौ में अपने अहंकार को गलाना चाहता है। उसे यह पछतावा है कि कभी उसका मन प्रभु-भक्ति में लीन नहीं हुआ। कभी उसके मन में आस्था की ज्योति प्रज्वलित नहीं हुई इसलिए उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई।

प्रत्येक-1 अंक

प्र०9 - कवयित्री दीपक को विहँस-विहँस कर जलने को क्यों कहती है?

उ० - वह प्रभु को प्रसन्न करना चाहती है।

प्र०10 'स्नेहहीन दीपक' से क्या तात्पर्य है?

उ० - स्नेहहीन दीपक से कवयित्री का तात्पर्य है- तेल (प्रेम) से रहित दीपक अर्थात प्रभु के प्रति भक्ति एवं प्रेम से विरक्त प्राणी।

प्र०11 - सागर को 'जलमय' कहने से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उ० ⇒ सागर को जलमय कहने से कवयित्री का अभिप्राय संसार के लोगों को सुख-वैभव से परिपूर्ण ~~[illegible]~~ होने पर भी लोग द्वेष, अहंकार ईर्ष्या आदि से जल रहे हैं अर्थात उनके हृदय जल रहे हैं।

प्रत्येक - 3 अंक पाठ्य पुस्तक के प्रश्न

प्र० 12 - प्रस्तुत कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं?

उ० - 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा ने प्रतीकों का सुंदर प्रयोग किया है। 'दीपक' इस प्रकाश स्रोत का प्रतीक है, जिसने विश्वसभ्यता को निरंतर प्रकाशित किया है। यह प्रतिपल आलोकित होकर मनुष्यता को एक निश्चित दिशा देने की प्रक्रिया में है। कवयित्री का प्रियतम कोई मनुष्य नहीं, बल्कि अज्ञात प्रिय 'ईश्वर' अर्थात सबका कल्याण करने वाली मानवता की एक छवि है।

प्र०13- दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है?

उ० - दीपक से निरंतर जलते रहने का आग्रह किया जा रहा है। दीपक स्वयं जलता है परंतु दूसरों का मार्ग प्रकाशित कर देता है। दीपक से हर परिस्थिति में, चाहे आँधी हो या तूफान, यहाँ तक अपने अस्तित्व को मिटा कर भी जलने का आह्वान किया जा

रहा है। कवयित्री के लिए प्रभु ही सर्वस्व है। इसलिए वह अपने हृदय में प्रभु के प्रति आस्था और भक्ति का भाव जगाए रखना चाहती है।

प्र० 14- 'विश्व-शलभ' दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है?

उ०- विश्व-शलभ का आशय है- सारा संसार। कवयित्री शलभ अर्थात पतंगों के समान प्रभु भक्ति की लौ में लगकर अपने अहं को गलाना चाहती है। जिस प्रकार पतंगा दीपक के साथ जलकर अपना अस्तित्व मिटा देना चाहता है। वह सोचता है कि जब एक छोटा-सा दीपक अपने शरीर का कण-कण जलाकर औरों को प्रकाश दे सकता है तो वह भी किसी के लिए अपना बलिदान देकर अनंत के साथ मिलकर एकाकार होना चाहता है। दूसरे शब्दों में, संसार के लोग अपने अहंकार को गलाकर प्रभु को पा लेना चाहते हैं।

प्र० 15- कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग-अलग तरह से मधुर-मधुर, पुलक-पुलक, सिहर-सिहर और विहँस-विहँस जलने को कहा है।

उ०- कवयित्री अपने आस्था रूपी दीपक को हर बार अलग-अलग ढंग से जलने के लिए कहा है। कभी मधुर-मधुर कभी पुलक-पुलक और कभी विहँस-विहँस खुशी को व्यक्त करने के लिए कहती है। 'मधुर-मधुर' में मौन मुस्कान है। पुलक-पुलक में हँसी की उमंग है। कवयित्री चाहती है कि इस भी भक्ति भावना में प्रसन्नता बनी रहे। चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो आस्था रूपी आध्यात्मिक दीपक सदैव जलता रहे और परमात्मा का मार्ग प्रशस्त करे।

प्र० 16- आपकी दृष्टि में 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है?

(क) शब्दों की आवृत्ति पर

उ०- (ख) सफल बिंब अंकन पर

उ०- इस कविता की सुंदरता इन दोनों में से किसी एक पर निर्भर नहीं है न ही दोनों में से किसी एक की विशेषताओं पर। किसी भी कविता की सुंदरता अनेक कारकों पर निर्भर होता है। इस कविता में इन दोनों विशेषताओं का कुछ न कुछ योगदान अवश्य है।

(क) शब्दों की आवृत्ति- कविता में अनेक शब्दों की आवृत्ति हुई है-
- मधुर मधुर मेरे दीपक जल।
- युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल।
- पुलक-पुलक मेरे दीपक जल।
- सिहर-सिहर मेरे दीपक जल।

इनसे प्रभु-भक्ति का भाव स्पष्ट हुआ है। इसमें और अधिक प्रसन्नता, उत्साह और उमंग से निरंतर जलते रहने का भाव प्रकट हुआ है।

17-(ख) सफल बिंब अंकन-

इस कविता में बिंबों का सफल अंकन हुआ है, जैसे-

सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन।

इसमें कवयित्री की भाव-नात्मक कोमलता प्रकट हुई है। दोनों विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि दोनों कारण कविता को सुंदर व प्रभावी बनाने में सक्षम हैं। शब्दों की आवृत्ति से कविता में संगीतात्मकता आ गई है। और बिंबों का अंकन भाव बोध में सहायक सिद्ध हुआ है।

अतिलघु प्रश्न - 1 अंक

प्र० 18 — कवयित्री किस भावना का वर्णन करती है।

उ० - कवयित्री अपने मन में प्रभु के प्रति निरंतर आस्था जलाए रखना चाहती है।

प्र० 19 — कवयित्री किस प्रकार का प्रकाश फैलाना चाहती है?

उ० - कवयित्री चारों ओर प्रभु-भक्ति का प्रकाश फैलाना चाहती है।

प्र० 20 → इस कविता में नभ किसका प्रतीक है?

उ० - प्रस्तुत कविता में नभ संसार का प्रतीक है। कवयित्री के अनुसार सभी ने सांसारिक सफलता तो सब प्राप्त की है किंतु वे प्रभु-भक्ति से वंचित हैं।